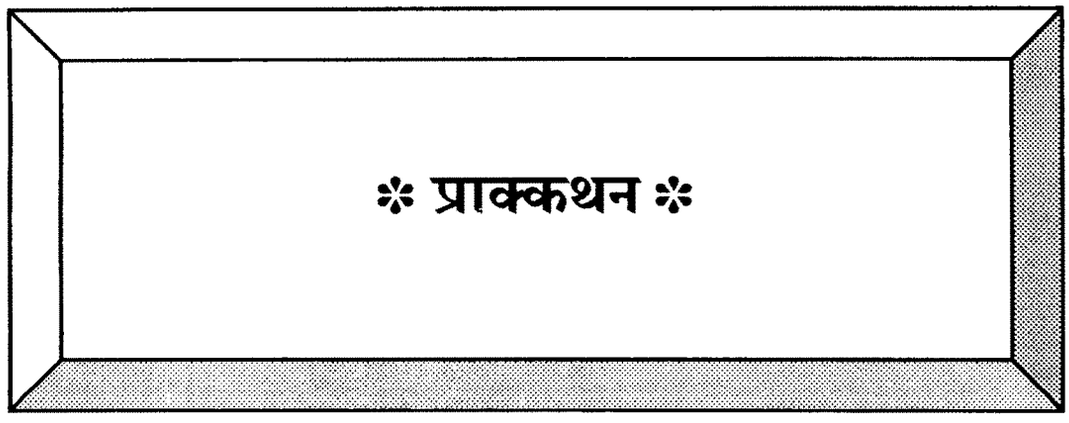

# * प्राक्कथन *

# प्राक्कथन

कविता मानव जीवन का अभिन्न अंग है। कविता पढ़ने में मेरी भी रुचि रही है। कविता पढ़ना आसान है। परंतु उसे समझना कठिन है। फिर उसमें अन्वेषण तो बहुत कठिन। किसी भी कवि या कवयित्री का अध्ययन करने के लिए उनके जीवन तथा रचनाओं का परिचय पाना आवश्यक होता है। कवि या कवयित्रियों के संपूर्ण जीवन की झाँकी संभवतः कृतियों में देखने को मिलती हैं

कभी-कभी कवि या कवयित्रियाँ सत्य घटनाओं को कल्पना के आधार पर अभिव्यक्त करते हैं। इसी कारण मुझे सभी कवियों की कविताएँ अधिक पसंद है। कविता एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा कवि सामाजिक व्यवस्था पर करारी चोट भी करता है।

एम्.ए.तथा एम्.फिल्. में भारतेंदु से लेकर समकालीन कवि तथा कवयित्रियों का अध्ययन करने के बाद ध्यान में आया कि कवियों के साथ अनेक कवयित्रियाँ भी इस काल में सृजनरत रही हैं। जैसे जुगलप्रिया, सरस्वती देवी, विद्यावति 'कोकिल', महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, दिनेश नंदिनी डालमिया, सावित्री परमार, सावित्री डागा, रमणिका गुप्ता, सुनीता जैन, गगन गिल, शीला गुजराल, अनामिका, शुभा वर्मा आदि अनेक। इनमें से सुनीता जैन की कविताओं ने मुझे अधिक आकृष्ट किया। कारण यह कि उनके द्वारा कविताओं में केवल 'माँ' को केंद्र में रखकर अत्यंत मर्मस्पर्शी और भावुक अभिव्यंजना हुई दिखाई देती है।

कवयित्री सुनीता जैन के आज तक लगभग तैंतीस कवितासंग्रह प्रकाशित हुए हैं। उनकी कविताओं के विषय ये रहे हैं, प्रकृति-चित्रण, नारी चित्रण, स्त्री-पुरुष संबंधों का चित्रण, राधा-कृष्ण का प्रणय चित्रण, प्रेम वर्णन आदि अनेक।

अनुसंधान के आरंभ में मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न खड़े हुए।

1) सुनीता जैन का जीवन परिचय तथा रचनात्मक परिचय क्या होगा?

2) सुनीता जैन की कविताओं के विषय क्या है?

3) सुनीता जैन आधुनिक हिंदी कविता विकास प्रक्रिया के कौन से दौर की कवयित्री है?

4) सुनीता जैन का समकालीन कवयित्रियों में क्या स्थान है?

5) उन्होंने अपनी 'माँ' को ही कविता का केंद्र बिंदू क्यों बनाया?

अतः इस संदर्भ में मेरी गुरूवर्या डॉ.पाटिल मॅडम जी से चर्चा की और ''सुनीता जैन की कविता में अंकित 'माँ' '' विषय का अनुसन्धान के लिए चयन किया।

- अब तक संपन्न शोध कार्य और समीक्षाएँ :-

कवयित्री सुनीता जैन ने कुल मिलाकर तैंतीस कवितासंग्रहों का सृजन किया है। उनकी कविताओं पर हाल ही में विविध विश्वविद्यालयों में शोधकार्य प्रारंभ होने की जानकारी मिली है।

1) कु.प्रगति सूर्यवंशी : ''सुनीता जैन कृत 'गंगा तट देखा' में प्रकृति तादात्म्य'', डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर विश्वविद्यालय, औरंगाबाद। (महाराष्ट्र) (एम्.फिल.उपाधि के लिए लघु शोध-प्रबंध) मार्गदर्शिका - डॉ. पद्मा पाटिल 2002 (औरंगाबाद)

2) कु.प्रगति सूर्यवंशी : ''सुनीता जैन का साहित्य : एक अध्ययन।'' डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) (पीएच्.डी.उपाधि के लिए शोध-प्रबंध)

मार्गदर्शक - डॉ.प्रकाश जाधव 2003 (उस्मानाबाद)

मेरे लघु शोध-प्रबंध का विषय है ''सुनीता जैन की कविता में अंकित 'माँ' '' 'माँ' विषय ही इतना गहरा है कि उसपर जितना लिखा जाए उतना कम ही है। आकाश की ऊँचाई और सागर की गहराई तक का हम पता नहीं लगा सकते वैसे 'माँ' की ममता भी बताई नहीं जा सकती।

'माँ' त्याग, ममता और कर्तव्यपरायणता की देवी है। कवयित्री सुनीता जैन के काव्य में 'माँ' को महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस लघु शोध-प्रबंध के जरिये

मैं 'माँ' के प्रेम को उजागर करना चाहती हूँ। इसलिए चयित विषय का बहुत महत्त्व है।

प्रस्तुत विषय का अध्ययन सुचारु रूप से होने के लिए उसे चार अध्यायों में विभाजित किया।

- प्रथम अध्याय : ''सुनीता जैन : जीवन तथा रचनात्मक परिचय'' :-

प्रस्तुत अध्याय में कवयित्री सुनीता जैन का जन्म, माता, पिता, बचपन तथा विवाह, शिक्षा-दीक्षा, नौकरी, सृजनात्मक व्यक्तित्व, प्रेरणा, साहित्येतर गतिविधियाँ, सम्मान एवं पुरस्कार आदि का वर्णन किया है। उनके रचनात्मक परिचय में एक उपन्यासकार, एक कहानीकार और कवयित्री के रूप में उनका योगदान बताया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

- द्वितीय अध्याय : ''आधुनिक हिंदी कवयित्रियों में सुनीता जैन का स्थान'':-

हिंदी कविता की विकास प्रक्रिया के हर चरण में अनेक कवयित्रियाँ लिखती रही हैं। कुछ ख्यात नाम इस प्रकार हैं - जुगलप्रिया, सरस्वती देवी, विद्यावति 'कोकिल', महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, सावित्री परमार, सावित्री डागा, रमणिका गुप्ता, सुनीता जैन, शुभा वर्मा, अनामिका आदि अनेक। सुनीता जैन समकालीन कविता की कवयित्री हैं। अतः उस कविता के अंतर्गत उनकी चर्चा करके अन्य कवयित्रियों में उनके स्थान को स्पष्ट किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

- तृतीय अध्याय : '' 'माँ' : स्वरूप विवेचन'' :-

प्रस्तुत अध्याय में 'माँ' का अर्थ, 'माँ' शब्द की व्युत्पत्ति, 'माँ' की ममता, स्वभाव आदि विशेषताओं पर प्रकाश डाला हैं। 'माँ' संकल्पना का स्वरूप विवेचन प्रस्तुत अध्याय में किया है। विविध भाषाओं के शब्दकोशों में दिए अर्थ, व्युत्पत्ति आदि के आधार पर इस संकल्पना को स्पष्ट किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

- चतुर्थ अध्याय : '' सुनीता जैन की कविता में 'माँ' '' :-

कवयित्री सुनीता जैन ने अपनी कविताओं में 'माँ' की अवस्थाओं

का चित्रण किया है। उनकी समग्र कविताओं का केंद्रबिंदू 'माँ' है उसका विश्लेषण किया है। कवयित्री की 'माँ' के बारे में क्या धारणा है? उनकी कविता में 'माँ' इतनी बार-बार क्यों आयी? और कौन से रूपों में आयी आदि का अध्ययन प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपनी माँ के साथ ही अन्य स्त्रियाँ जो माँ हो सकती हैं संबंधी भी अभिव्यक्ति की है, उसे यहाँ अध्ययन प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

अनुसन्धान पश्चात् के निष्कर्षों को 'उपसंहार' में दिया है। प्रस्तुत अनुसन्धान ''सुनीता जैन की कविता में अंकित 'माँ' '' शोधकार्य संपन्न करने के लिए अनेक संदर्भ ग्रंथों, कवयित्री की मूल कवितासंग्रह, पत्र-पत्रिकाएँ आदि का उपयोग किया है। प्रस्तुत अनुसन्धान कार्य, अनुसन्धान की व्याख्यात्मक, शास्त्रीय तथा सर्वेक्षणात्मक पद्धति का उपयोग करके संपन्न किया है।

जीवन एक चुनौती है। जिसका हर व्यक्ति को सामना करना पड़ता है। उसका सामना करते वक्त हमारे उपर किसी ना किसी के तो ऋण रहते ही है। इसी तरह का ऋण मुझ पर मेरी गुरूवर्या पाटिल मॅडम की प्रेरणा तथा मार्गदर्शन का है। जिसका फल मेरा मौलिक लघु शोध-प्रबंध है। उनके ऋण तो मैं कभी भी नहीं चुका पाऊँगी। परंतु इसका अहसास मुझे मेरे जीवन में हमेशा रहेगा। इसलिए उनको भूलना मेरे लिए असंभव है।

आदरणीय गुरूवर्या और हिन्दी विभाग की अध्यक्ष डॉ.पद्मा पाटिल मॅडम तथा विभाग के सभी आदरणीय गुरूजनों की मैं आभारी हूँ। इस शोधकार्य के दौरान कवयित्री सुनीता जैन का भी महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा। उन्होंने समय-समय पर मेरी जिज्ञासा और समस्याओं को पूरा किया। इसलिए मैं आजीवन उनका स्मरण रखूँगी प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध पूरा करने का सारा श्रेय मैं अपने माता-पिता को देती हूँ। मेरी बड़ी बहन संपदा, जीजाजी प्रभाकर और उनके बेटे विवेक, शुभम मेरे बड़े भैय्या संतोष, भाभी स्वाती और छोटे भैय्या हणमंत से मुझे सदा ही प्रेरणा मिलती रही है। मेरे मामा श्री.रामचंद्र, ब्रह्मदेव, तानाजी और जयंत उनसे भी मुझे प्रेरणा मिलती रही है।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के सभी कर्मचारियों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मुझे सहयोग दिया। शोध-ग्रंथ के रूप

में टंकलेखक श्री.मिलिंद भोसले जी की मैं आभारी हूँ। जिन-जिन लोगों ने मेरे इस लघु शोध-प्रबंध के कार्य में मुझे सहयोग दिया उनके प्रति भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ। मैं इस लघु शोध प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परिक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

स्थान : कोल्हापुर
तिथि :

सुश्री.सुनीता विठ्ठल साळुंखे
(शोध छात्रा)